शोध मंथन Vol. XVI No.2 Apr.- June. 2025 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X, Impact Factor 8.877 (SJIF)
https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.37

अंग्रजों के अधीन आने से पूर्व पश्चिमी उत्तर प्रदेश की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

प्राप्तिः 05.03.2025
स्वीकृतः 22.04.2025

37

डॉ. आलोक कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास विभाग)
गोचर महाविद्यालय, रामपुर मनिहारन, सहारनपुर
ईमेलः aloketah383@gmail.com

सारांश

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के अन्तर्गत गंगा–यमुना दोआब का कुरू प्रदेश, ब्रज क्षेत्र तथा रूहेलखण्ड सम्मिलित हैं। यहाँ से सैंधव सभ्यता से लेकर अंग्रेजों के अधीन आने से पूर्व मराठा आधिपत्य तक के साक्ष्य प्राप्त होते हैं। प्राचीन काल में यह क्षेत्र मगध तथा कन्नौज के आधिपत्य में रहा। किन्तु मध्यकाल में जब केन्द्रीय सत्ता का केन्द्र दिल्ली बन गयी तब यह क्षेत्र दिल्ली सल्तनत तथा बाद में मुगल शासन के अधीन आ गया। कमजोर मुगल शासकों के काल में इस क्षेत्र पर रूहेला सरदार नजीबुद्दौला ने अपना प्रभाव स्थापित कर लिया। महाद जी सिंधिया ने मुगल बादशाह शाह आलम को अंग्रेजों के प्रभाव से निकालकर दिल्ली में गद्दी पर बैठाया। शाह आलम तथा महाद जी सिंधिया के मध्य हुई संधि के अनुसार यह क्षेत्र मराठों के प्रभाव में आ गया। आंग्ल मराठा युद्ध के पश्चात् अंग्रेजों तथा सिंधिया के मध्य 30 दिसम्बर, 1803 को सुरजी अर्जन गाँव की संधि हुई। जिससे पश्चिमी उत्तर प्रदेश का क्षेत्र अंग्रेजों के अधीन आ गया।

मुख्य बिंदु

दोआब, कुरू प्रदेश, ब्रज क्षेत्र, रूहेलखण्ड, केन्द्रीय सत्ता।

प्राचीन काल में ऊपरी गंगा–यमुना दोआब क्षेत्र में कुरू प्रदेश, ब्रज क्षेत्र तथा रूहेलखण्ड का भू–भाग था। कुरू जनपद की भूमि गंगा तथा यमुना की ऊपरी घाटियों के ऊपरी भाग में थी।[1] कुरू प्रदेश के विभिन्न स्थानों पर पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग द्वारा उत्खनन का कार्य किया गया है, उसमें ऐसी सामग्री बहुतायत में मिली है, जिसने इसका सम्बन्ध सिंधु घाटी तथा हडप्पा सभ्यता से जोड दिया है।[2]

पुरातत्वविद् बी. बी. लाल का कथन है कि इस क्षेत्र में सभ्यता का विकास बहुत पहले से हुआ था। हडप्पा सभ्यता के लोगो ने सहारनपुर, मेरठ इत्यादि जिलो में कुछ बस्तियाँ बसाई थी। हडप्पा सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल मेरठ जिले का आलमगीरपुर है, जो कि मेरठ मुख्यालय से लगभग 25 किमी० पश्चिम में स्थित है। इसी क्रम में बडौत तहसील मुख्यालय से 6 किमी० पश्चिम में सिनौली सादिकपुर गाँव में परवर्ती हडप्पा सभ्यता के अवशेष मिले है।[3]

ऊपरी गंगा यमुना दोआब की सांस्कृतिक परम्परा सम्भवतः उस संस्कृति के साथ शुरू होती है, जिसे अपने विशिष्ट मृदभांड के नमूने के कारण 'गेरूवर्णी मष्दभांड संस्कृति' कहा गया। इसके साक्ष्य अनेक स्थलो पर मिले है, विशेषतः हस्तिनापुर और अतंरजीखेडा। हस्तिनापुर मेरठ के समीप गंगा के किनारे स्थित है। अतंरजीखेडा उत्तर प्रदेश के एटा जिले के अर्न्तगत गंगा की सहायक नदी काली नदी के तट पर स्थित एक प्रागैतिहासिक स्थल है।[4]

यह संस्कृति ईसा पूर्व तीसरी सहस्राब्दी के पूर्व में आती है। अतः यह आंशिक रूप से हडप्पा सभ्यता की समकालीन थी। इस संस्कृति के मृदभांड तथा अतरंजीखेडा में इस स्तर पर चावल का पाया जाना उल्लेखनीय है। कुछ नवीन अन्वेशणों से पता चलता है कि राजस्थान में इस संस्कृति के कई और भी पुराने स्थल है, परन्तु राजस्थान और दोआब में इस प्रकार के मृदभांड मिलने से दोनों स्थलो में क्या संबन्ध रहा होगा यह स्पष्ट नहीं है।

गंगा घाटी में समय–समय पर कुल्हाडियाँ मत्स्य भाले, भाले शृंगिकायुक्त तलवारें इत्यादि जैसे कतिपय ताम्र उपकरण मिले है, इन्हे साधारणतः गंगा घाटी ताम्र निधि (Gangetic Valley Copper Hoards) कहा गया। सइपक नामक स्थान पर एक तलवार और एक मत्स्य मोल का सिर मिला है, जिनका गेरूवर्णी से सीधा संबन्ध देखा गया है।

गंगा यमुना ऊपरी दोआब में सांस्कृतिक परम्परा की अगली अवस्था पर काले–लाल मृदभांड संस्कृति देखने को मिलती है। इस संस्कृति का अतरंजीखेडा एक महत्वपूर्ण स्थल है।

इस संस्कृति के अगले चरण की विशेषता चित्रित धूसर भांड संस्कृति है। इसका मूल वितरण क्षेत्र सिंधु गंगा विभाजक तथा ऊपरी गंगा घाटी है। ऊपरी गंगा घाटी में उत्खनित लौहयुक्त स्तर अहिच्छत्र, आलमगीरपुर, अतरंजीखेडा, हस्तिनापुर, जखेडा, मथुरा में मिले है। हस्तिनापुर में घोडे की अस्थियाँ मिली है। कपडे के छापे अतरंजीखेडा और के ठीकरो पर मिले है। लोहे की वस्तुओ में भाले, तीर, काँटे, कोटर, चूल, कुल्हाडियाँ, कुदाल जखेडा से, चाकू, फलक, सरिया, चिमटा अतरंजीखेडा से मिला है। अतरंजीखेडा की तिथि ई०पू० 1025 मानी जाती है।

वैदिक काल – सप्त सैन्धव प्रदेश से चलकर आर्यो ने यमुना को पार कर सबसे पहले जिसे अपना उपनिवेश बनाया वह उशीनर सहारनपुर ही है।[5]

यहाँ पर उन्हें न केवल यहाँ के मूल निवासियो से ही युद्ध करने पडे, बल्कि आर्यो के विभिन्न कबीलो में भी परस्पर युद्ध हुए। कुछ समय बाद बडे राज्यों का निर्माण हो गया। इन राजाओ के मंत्री ब्राह्मण हुआ करते थे, जो यज्ञो में पुरोहित बनते थे। जनसाधारण में भी ब्राह्मणो का बडा प्रभाव था। इसी कारण गंगा और यमुना के बीच के प्रदेश का नाम ब्रह्मर्षि पड गया।[6]

आर्यो ने पंजाब के बाद इस प्रदेश पर अधिकार कर लिया। इसकी पुष्टि इस बात से होती है कि ऋगवेद में गंगा और यमुना का उल्लेख केवल एक ही बार आया है।[7] आर्यो और इस क्षेत्र के मूल निवासियो के संर्घष का उदाहरण ऋगवेद में मिलता है। दासो के राजा शम्भर के साथ आर्य राजा दिवोदास का चालीस वर्ष तक युद्ध हुआ। इन्द्र के सहयोग से शम्भर मारा गया।[8]

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.37

दिवोदास के पुत्र सुदास ने पौरव राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। वहाँ का राजा संवरण पंजाब की ओर भाग गया। सुदास ने 10 राजाओ के संघ को भी पराजित किया था। इस प्रकार समस्त आर्यवर्त पर उसका अधिकार स्थापित हो गया। संवरण ने कुछ समय बाद अपना प्रदेश पुनः जीत लिया। उसके पुत्र कुरू के नाम पर सरस्वती से गंगा तक का प्रदेश कौरव प्रदेश कहलाया।[9]

गौतम बुद्ध के समय कोशल राज्य का विस्तार हिमालय से काशी तक हो गया था और वहाँ महाकोशल के नाम से जाना जाने लगा था।[10] अतः पश्चिमी उत्तर प्रदेश बुद्ध के समकालीन महाकोशल के राजा प्रसेनजित के अधीन रहा।

महापद्मनन्द के शासनकाल में मगध का एकछत्र राज्य उत्तर बिहार से यमुना नदी तक विस्तृत था। पश्चिमी उत्तर प्रदेश इस राज्य का भाग बना रहा। चौथी सदी ई०पू० में सम्भवतः नन्द सम्राट महापद्मनन्द ने कुरू वंश को पराजित कर हस्तिनापुर को नन्द राज्य में मिला लिया।[11]

चन्द्रगुप्त और आचार्य चाणक्य नन्द से प्रथम बार पराजित होने के बाद कौशाम्बी से काम्पिल्य (फर्रूख़ाबाद) और शुक्र क्षेत्र होते हुए गोविन्दषार और वहाँ से शिवालिक के साथ–साथ चलकर मायापुरी होते हुए शाकम्भरी पहुँच गये थे।[12] यहीं पर बैठकर उन्होने नन्द को पराजित करने के लिए सेना का संगठन किया था।[13] और हिमवत् कूट जाकर चाणक्य ने पर्वतक के साथ सन्धि की थी।[14] नन्द को पराजित करने और पाटलिपुत्र पर अधिकार करने के बाद चन्द्रगुप्त ने समस्त उत्तरी भारत पर अधिकार कर लिया। इस प्रकार पश्चिमी उत्तर प्रदेश मौर्य साम्राज्य का अंग बन गया।

इसकी पुष्टि अशोक के शिलालेखो और स्तम्भलेखों से भी होती है। अशोक के चौदवें शिलालेख की तीसरी प्रतिलिपी देहरादून के कालसी नामक स्थान से प्राप्त हुई है।[15] सहारनपुर जनपद मौर्य साम्राज्य का अंग था, इसकी पुष्टि खिजराबाद जिले के टोपरी नामक स्थान से प्राप्त अशोक के स्तम्भ से भी होती है।[16] अशोक ने अपने राज्यरोहण के 26वें वर्ष में मेरठ में अपना स्तम्भ लेख स्थापित कराया।[17]

गुप्त काल में पश्चिमी उत्तर प्रदेश गुप्त साम्राज्य का अंग था। शाकम्भरी और उसके आस–पास शिवालिक की पहाडियों में गुप्त कालीन मूर्तियाँ एंव चाँदी के सिक्के सहारनपुर के अनेक स्थानो से प्राप्त हुए है।[18] पाँचवी शताब्दी के प्रथम दशक में चन्द्रगुप्त द्वितीय ने इस क्षेत्र को गुप्त साम्राज्य में मिला लिया।[19] गुप्त काल में ही मंगलौर कस्बा बसा, यहाँ का राजा मंगल सेन गुप्त राजाओ का सामन्ता था।[20] एटा जिले के बिलसड नामक स्थान से एक स्तम्भ प्राप्त हुआ है। जो कुमार गुप्त के शासनकाल का है। इसमें ध्रवशर्मन द्वारा स्वामी महासेन (कार्तिकेय) के मंदिर में किये गये पुण्य कार्यो का वर्णन है।[21]

स्कन्दगुप्त ने 460ई0 में सर्वनाम नामक नाग सरदार को अन्तर्वेदी विषय का गर्वनर नियुक्त किया।[22] उस समय प्रयाग से लेकर हरिद्वार तक का गंगा यमुना दोआब क्षेत्र अन्तर्वेदी विषय कहलाता था। बुलन्दशहर जिले के इन्दौरा गाँव से उसका ताम्रपत्र प्राप्त हुआ है। इस पर तेल व्यवसाय करने वाली श्रेणी का वर्णन है।

छठीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उत्तरी भारत की प्रमुख राजनैतिक शक्ति भौखरी राजवंश था। राजनैतिक सत्ता का केन्द्र अब पाटलिपुत्र न रहकर कन्नौज हो गया था। अपने चरमोत्कर्ष पर भौखरी

राज्य अहिक्षेत्र को सम्मिलित करते हुए पश्चिम में थानेश्वर राज्य की सीमा तक विस्तृत था।[23] इसी समय थानेश्वर राज्य में एक नये राजवंश का उदय हो रहा था। ग्रहवर्मन की हत्या के बाद हर्ष थानेश्वर और कन्नौज का शासक बना। इस प्रकार समस्त उत्तरी भारत पर उसका अधिकार हो गया।[24]

760ई0 के लगभग कन्नौज पर आयुध वंश का अधिकार हो गया। इस वंश के तीन शासको वज्रायुद्ध, इन्द्रायुद्ध, चक्रायुद्ध ने क्रमशः शासन किया। उनका राज्य यमुना नदी तक विस्तृत था। राजशेखर ने अपने नाटक कर्पूरमंजरी में लिखा है कि "पांचाल के राजा वज्रायुद्ध की राजधानी कन्नौज है।"[25]

आयुध शासको के कमजोर होने के कारण कन्नौज पर अधिकार करने के लिए पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूटों के त्रिपक्षीय संघर्ष प्रारम्भ हो गया। अंततः प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय ने अधिकार करके उसे अपनी राजधानी बनाया। नागभट्ट द्वितीय के वंशज मिहिर भोज की आदि वराह प्रकार के सिक्के सहारनपुर मे मिले है।[26]

गुर्जर प्रतिहारो के समय में ही मुस्लिम आक्रमण प्रारम्भ हो गये थे। अलबरूनी ने अपने यात्रा विवरण में शहरशराह का उल्लेख किया है। वह लिखता है कि "कन्नौज से उत्तर की ओर जाते हुए आप शहरशराह पहुँच जायेंगे। यह कन्नौज से पचास परसंग है।" कनिंघम इसे वर्तमान सरसावा मानते है।[27]

नियतलगीन के आक्रमण के बाद उत्तरी गंगा घाटी पर भोज परमारों का अधिकार हो गया। उसके राज्य में उत्तर और पूर्वी उत्तर ग्वालियर होते हुए सारा उत्तर प्रदेश और बिहार के भाग सम्मिलित थे।[28]

गहडवाल शासक चन्द्रदेव ने उस समय उत्तर भारत पर अपना अधिकार स्थापित किया, जब दोआब पर तुर्को के आक्रमण बार–बार हो रहे थे।[29] और उन्हें कोई सत्ता रोक नही पा रही थी। गोविन्द चन्द्र गहडवाल के बसई अभिलेख से पता चलता है कि उसने काशी कुशिक(कन्नौज), उत्तर कोशल और इन्द्रप्रस्थ के सभी पार्श्ववर्ती क्षेत्रो पर अधिकार कर लिया था।[30]

पृथ्वीराज चौहान की पराजय के पश्चात् मौहम्मद गौरी के एक गुलाम कुतबुद्दीन ऐबक ने भारत के बहुत बडे क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। किन्तु मुस्लिम सत्ता की विजय अस्थायी थी। इल्तुतमिश ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में अपनी जडें मजबूत की। इल्तुतमिश ने पहली बार शिवालिक तक के प्रदेश को जीतकर मंडावर पर विजय पताका लहरायी थी।[31] सल्तनत काल में सम्भल, बदायूँ तथा रपरी (मैनपुरी) के अक्ता महत्वपूर्ण थे।

मुगल वंश के संस्थापक बाबर ने इब्राहिम लोदी को पराजित कर दिल्ली पर अधिकार कर लिया। अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिए उसने खानवा में राणा सांगा को पराजित किया। इस प्रकार पश्चिमी उत्तर प्रदेश मुगलो के अधीन आ गया। आगरा और दिल्ली मुगलो की राजधानी रही है। इस काल में पश्चिमी उत्तर प्रदेश राजनैतिक रूप से सर्वाधिक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा।

मुगल सत्ता के कमज़ोर होने पर इस क्षेत्र पर रूहेलो का प्रभाव बढ गया। पानीपत की पराजय के लगभग एक दशक बाद मराठे फिर से शक्तिशाली हो गये और उन्होनें भारतवर्ष में अपना प्रभाव बढाना प्रारम्भ कर दिया। इसी बीच नजीबुद्दौला की मृत्यु हो गयी।[32] महाद जी सिंधिया ने मुगल बादशाह शाहआलम को अंग्रेजो के प्रभाव से निकालकर दिल्ली के तख़्त को पुनः प्राप्त करने में सहायता की। शाहआलम और महादजी सिंधिया के बीच एक सन्धि हुई जिसके तहत मेरठ मंडल में

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i02.37

15 लाख वार्षिक लगान वाला भाग मराठो को देने का वादा किया गया।[33] किन्तु कुछ समय पश्चात् नजकखान और शुजाउद्दौला ने अंग्रेजो की मदद से मराठो को खदेड दिया।[34] दिल्ली में राजनैतिक अस्थिरता के कारण बादशाह शाहआलम ने महादजी सिंधिया से सहायता लेने का निश्चय किया, और एक समझौते के तहत उसे सन् 1784 में मीरबख्शी और रीजेंट बना दिया। उसे दोआब का गर्वनर भी बनाया गया। 30 दिसम्बर 1803 को सुरजी अर्जन गाँव की संन्धि से समस्त दोआब अंग्रेजो के अधीन आ गया।[35]

पश्चिमी उत्तर प्रदेश ऊपरी गंगा–यमुना दोआब का भाग है। इस क्षेत्र पर प्राचीन काल से ही केन्द्रीय सत्ता का प्रभाव रहा है। प्राचीन काल मे सत्ता का केन्द्र मगध था। यह क्षेत्र मगध के अधीन रहा। गुप्त काल के पष्चात् मगध का स्थान कन्नौज ने ग्रहण कर लिया तथा मध्यकाल में दिल्ली सत्ता का केन्द्र बन गई और यह भू–भाग दिल्ली के अधीन हो गया। जब मराठों ने दिल्ली पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया तब यह क्षेत्र मराठों के नियन्त्रण में आ गया। मराठों की पराजय के पश्चात् इस क्षेत्र पर अंग्रेजों की सत्ता स्थापित हुई।

संदर्भ

1. बी. बी लाल : एक्सकेवेशन ऐट हस्तिनापुर एंड अदर एक्सप्लोरेशन इन द ऊपर गंगा एण्ड सतलज बेसिन 1950–52, ऐन्शिएण्ट इंडियन (भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का बुलटन) संख्या 10–11,1954–55, पृ० सं०–8–9 ।
2. विघ्नेश कुमार एंव दीपक सिंघल : मेरठ मंडल का स्वर्णिम अतीत, हस्तिनापुर शोध संस्थान, मेरठ 2002 पृ० सं०–10–15।
3. मेरठ यूनि० एल्युमिनी रिसर्च जनरल, खण्ड 3 के अंतिम पष्ठ पर विघ्नेश कुमार का लेख "नवअन्वेष्ति हडप्पा स्थल"।
4. bharatdiscovery.org
5. डा० के. के. शर्मा : सहारनपुर सन्दर्भ, सन्दर्भ प्रकाशन सहारनपुर, 1986 पृ० सं०–69
6. मनु संहिता, द्वितीय, पृ० सं०–17–19
7. ऋगवेद, 10, 75, 5
8. ऋगवेद, 1, 130; 2 , 12; 3, 47; 6,26
9. वैदिक इंण्डेक्स, 1, 218
10. डा० के. के. शर्मा उपरोक्त पृ० सं०–70
11. द हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ द इंडियन पीपुल, जिल्द 2, पृ० सं०–32–33
12. राय चौधरी : पॉलिटिक्स हिस्ट्री ऑफ इंडिया, जिल्द 2, पृ० सं०–5, 131–132
13. महावंश टीका, पृ० सं०–123
14. सत्यकेतु विद्यालंकार : चाणक्य पृ० सं०–163–165
15. परिशिष्ट पर्वन अध्याय 8, पृ० सं०–291, 301, 313, 317
16. अशोक का कालसी अभिलेख।

17. कनिंघम : आर्केओलॉजिकल सर्वे रिपोर्ट, भाग 1, पृ० सं०–166।
18. डी०सी० सरकार : इन्सक्रिप्शन्स ऑफ अशोक, दिल्ली 1947, पृ० सं०–20, 67–68।
19. वासुदेव उपाध्याय : गुप्त साम्राज्य का इतिहास, पृ० सं०–57।
20. जे०ए०स०ब० : 1984, पृ० सं०–135।
21. नेविल : डिस्ट्रिक्ट गजेटियर सहारनपुर, 1921, पृ० सं०–273।
22. bharatdiscovery.org विजयेन्द्र कुमार माथुर : ऐतिहासिक स्थानावली राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ आकादमी, जयपुर पृ० सं०–630।
23. इन्दौरा ताम्रपत्र
24. सी०वी० वैद्य : हिस्ट्री ऑफ मिडिवल हिन्दू इंडिया, भाग 1 पृ० सं०–39।
25. एपिग्राफिया इण्डिका, भाग 1 पृ० सं०–69।
26. डा० के. के. शर्मा : उपरोक्त पृ० सं०–78।
27. राजशेखर कर्पूरमंजरी, बुक 3, पृ० सं०–74 (स्टेन कोनो का संस्करण)।
28. डा० के. के. शर्मा : उपरोक्त पृ० सं०–80
29. कनिंघम : आर्केओलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया रिपोर्ट, भाग 1, 1862–65 पृ० सं०–229
30. राजतरंगिनी, भाग 1, पुस्तक 4, श्लोक 132–133 (स्टेन कोनो का अनुवाद)
31. इलियट और डाउसन : हिस्ट्री ऑफ इंडिया भाग 2 , पृ० सं०–205, तथा भाग 3, पृ० सं०–523–24
32. उपरोक्त भाग 14, पृ० सं०–103
33. इलियट और डाउसन : हिस्ट्री ऑफ इंडिया भाग 2 , पृ० सं०–24, 187
34. गजेटियर ऑफ इंडिया, मेरठ पृ० सं०–43
35. गजेटियर ऑफ इंडिया, मेरठ पृ० सं०–43